प्रातःक्लास 19.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाचः बाप समझाते हैं मनुष्य को कब भी भगवान नहीं कहा जाता। भल बहुत मनुष्यों का नाम भी शिव रखा हुआ है ; परन्तु भगवान नहीं कह सकेंगे। यह भी जानते हैं शिव भगवान है। शिव के मन्दिर में जाते हैं, समझते हैं यह भगवान हैं। ऊँच ते ऊँच पहले है शिव भगवान का मन्दिर, पीछे है देवताओं के मन्दिर। बाकी तुम्हारे मन्दिर नहीं हैं। न ब्रह्मा का, न ब्रह्माकुमार–कुमारियों का मन्दिर है। ब्रह्माकुमारियां जानती हैं कि हम अभी देवता बन रहे हैं। हम बनते हैं चैतन्य शिवालय के और पीछे फिर जड़ शिवालय के मन्दिर बनेंगे। इस समय भारत को शिवालय नहीं कहेंगे। इनको कहा जाता है वैश्यालय। रावण राज्य है ना। रावण सम्प्रदाय है अथवा इसको आसुरी सम्प्रदाय भी कहे। कल अखबार में भी एक फोटो दिखाया था ओरिजिनल आदमी। वास्तव में यह इस समय के मनुष्य हैं। सिकल तो मनुष्य की है; परन्तु सीरत बन्दर मिसल है अर्थात् बुद्धि किसकी बन्दर मिसल, किसकी हाथी मिसल, किसकी गधे मिसल, किसकी बैल मिसल है; क्योंकि सभी जनावर बुद्धि हैं ना। तो इसमें भी जनावर का बुद्धि दे दिया है। यह है ही कांटों का जंगल। एक/दो को कांटा ही लगाते हैं। काम कटारी का कांटा लगता है ना। काम कटारी का कांटा लगाना यह तो जंगली जनावरों का ही काम है। एक/दो को दुःख देते हैं ना; इसलिए फिर पुकारते हैं बाबा, आओ इस जंगल से हमको बगीचे में ले चलो। जब यह देवी'–देवताएं थे तो गार्डेन था ना। वह कभी कांटा नहीं लगाते थे। यह 5 विकारों रूपी रावण होता नहीं। यहां ही रावण सम्प्रदाय हैं। जनावर हैं । बाप आत्माओं के लिए समझाते हैं। बात भी आत्माओं से करते हैं। आत्मा सुनती है शरीर द्वारा हर बात; परन्तु शरीर का अभिमान होने कारण कांटा कहा जाता है। रावण राज्य में सभी मनुष्य देहअभिमानी बन जाते हैं। क्रिमिनल आई हो जाती है। ऐसे नहीं समझना चाहिए कोई वायसलेस है। भल ब्रह्मचारी है, वह भी सदैव के लिए तो नहीं है । फिर भी क्रिमिनल आई हो जाती है। बाप कहते हैं तुम्हारी सिविल आईज़ होनी चाहिए। आत्मा को जब ज्ञान मिलता है तो उनकी आंखें खुल जाती हैं। तुम्हारी अभी आँखें खुल गई हैं अर्थात् ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम समझते हो हम आत्मा हैं, न कि शरीर। आत्माएं हम परमात्मा के बच्चे हैं। आपस में ब्रदर्स हैं। कहते हैं ब्रदर्सहुड। फादरहुद का कब नाम नहीं सुना होगा। बाबा ने समझाया है जब कोई भी आवे तो पहले उनसे पूछो तुम्हारे बाप कितने हैं? पहले दो बाप का परिचय मिल जाये। तीसरा बाप का राज़ बाद में समझाया जाता ; क्योंकि यह है बहुत गुह्य बात। यह सिर्फ पुरुषोत्म संगमयुग पर ही समझाया जाता है। एक है लौकिक, दूसरा है पारलौकिक। यह तो कॉमन बात है उनको सिर्फ पिता कहा जाता हैं। उनको (पारलौकिक) कहा जाता है परमपिता। सुप्रीम दोनों बाप को जानते हैं; परन्तु रावण–राज्य में देहभिमानी होने कारण देह के बाप से ही प्रीत रखते हैं। फिर दुःख में कहते हैं हे परमात्मा रहम करो। बच्चों को समझाया है भारत स्वर्ग था जबकि इन देवताओं का राज्य था। भारत को ही स्वर्ग कहा जाता है। और कोई देश को स्वर्ग नहीं कहा जाता। बाबा ने प्रश्न भी लिखवाई थी अपने से पूछो हम स्वर्गवासी हैं या नर्कवासी हैं? यह भारत के लिए ही है; इसलिए लिखना होता है हे भारतवासियों बताओ नर्कवासी हो या स्वर्गवासी? क्रिश्चयन वा मुसलमान से नहीं पूछ सकते हैं। यह है ही भारतवासियों के लिए। भारतवासी ही पतित दुनिया और पावन दुनियां को जानते हैं तब तो पुकारते हैं हे पतित–पावन आकर हमको पावन बनाओ। लिबरेट करो। गाइड बनो। बाप गाइड बनते हैं सिर्फ शान्तिधाम के लिए। सुखधाम के लिए गाइड नहीं बनते हैं। वहां तो खुद जाते ही नहीं। सुखधाम में तुमको जाना है। अभी तुम फिर से स्वर्गवासी बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। सन्यासी लोग तो कब स्वर्ग का नाम भी नहीं सुनेंगे; इसलिए बाप पूछते ही भारतवासियों से हैं। उस लिखत में शायद भ(ा)रतवासी अक्षर नहीं है। करेक्शन की जाती है ना। दिन–प्रतिदिन करेक्ट होते जाते हैं। यह नॉलेज है ही भारतवासियों के लिए। भारतवासी ही पहले नम्बर में स्वर्ग के फूल थे। क्रिश्चयन वा मुसलमान को फूल नहीं कहा जाता। वह उस गार्डेन के फूल

नहीं हैं। वह तो आते ही हैं बाद में। वैराइटी धर्म भी तो ज़रूर चाहिए ना। यह जो विराट रूप बनाया है यह भी भारतवासियों के लिए है। विराट संसार नहीं। वैराइटी तुम्हारी होती है। क़िसम–2 के मनुष्य हैं। कोई कैसे ,कोई कैसे। तो यह विराट रूप भी तुम्हारे लिए है। तुम समझा सकते हो बरोबर हम ही 84 जन्म लेते हैं। वह भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मैक्सीमम और मिनीमम होते हैं। सारे कल्प में तुम 84 जन्म लेते हो। तो आधा कल्प के बाद बाकी कितने जन्म लेंगे यह हिसाब निकालना होता है। यह नॉलेज है ही भारतवासियों के लिए। उन्हों को ही तुम समझाते हो। और बाकी उठावेंगे नहीं। उन्हों के लिए तो सिर्फ एक ही बात है। बोलो तुम मूलवतन में पावन आत्मा थे। अभी बाप कहते हैं पावन बनो। कोई भी धर्म वाला होगा कहेगा करो; क्योंकि रावण राज्य है ना। सभी को लिबरेट करते हैं। वह शान्तिधाम और तुम सुखधाम में चले जाते हो। बाप आकर सभी को ले जाते है। पहले–2 आकर भारतवासियों को ही हेविन बनाते हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जाते हैं। हेविनली गॉडफादर भी तुम कह सकते हो। औरों का कहना रॉंग है। इन बातों को सयाणे समझू अच्छी रीत समझ सकते हैं। पहले–2 भारत ही हेवन पैराडाइज़ था। अभी तो नर्क पुरानी दुनिया है। कैपिटल होती है ना जहां राजा–रानी रहते हैं। तो भारत भी कैपीटल था। जबकि इन ल.ना. का राज्य था। नवयुग में ही भारत नव होता है। यह तो सभी जानते हैं हम आते ही पीछे हैं। नई दुनियां में तो हम आते ही नहीं। नई दुनियां में देवी–देवताएं ही थे। तुम्हारे लिए बाप समझाते हैं तुम नवयुग के थे। अभी पुराने बन पड़े हो। फिर इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर पुरुषार्थ करने से ही तुम नवयुग के बनेंगे। पुरुषोत्तम होते ही हैं देवी–देवताएं। सबसे उत्तम गुणवान देवताएं ही हैं। वह तो अभी हैं नहीं। तुम ही देवता थे। फिर 84 जन्म लगाय कोई बन्दर, कोई क्या बन पड़े हैं। मनुष्यों ने सुना है जनावर जैसे मनुष्य थे तो जनावरों का ही चित्र बना दिया है। यह नहीं लिखा है कि अभी के मनुष्य जनावरों मिसल हैं। इस ज्ञान को तो बिल्कुल ही जानते नहीं। ऐसे ही सिर्फ लिख दिया है। जनावर जैसे मनुष्य थे। अनसुधरेली, अनार्य थे। पहले तुम भी अनसुधरेली थे। बन्दर बुद्धि थे। जनावर बुद्धि, घोड़े–गदहे बुद्धि थे। बुद्धि शरीर में तो नहीं है ना। आत्मा मन–बुद्धि सहित है। बाकी यह तो ऑरगन्स है। आगे तुम्हारी पत्थर बुद्धि थी। गदहे बुद्धि थे। मनुष्य जैसे कि जनावर बन जाते हैं। बाबा ने समझाया है कोस (घ)र कहा जाता है। तुम कसाई बन जाते हो। बाबा ने कल भी समझाया है कि गधे पर बोझा रखा जाता है ना। तो तुम्हारे सिर पर अने(क) जन्मों का विकर्म का बोझा है, जो बाप के सिवाय कोई उतार न सके। धोबी लोग भी मैले कपड़े साफ करने जाते हैं ना। बाप भी आकर धोबी बनते हैं। तुम बच्चों को लक्ष्य देते हैं कि मामेकं याद करो तो तुम पवित्र बन जावेंगे। कपड़े भी साफ हो जाते हैं ना। तुमको भी बाप सांवरा से गोरा बना देते हैं। सतयुग में यथा राजा–रानी तथा प्रजा गोरे थे। वही फिर 84 जन्म लेते सांवरा बने हैं; इसलिए पहले–2 तो मुख्य कृष्ण के लिए कहते हैं; क्योंकि वह नम्बरवन है ना; इसलिए उनका नाम रख दिया है श्याम–सुन्दर। पहले–2 सुन्दर थे, अभी श्याम बने हैं। तो उनका चित्र भी ऐसा बना देते हैं। उनका चित्र श्याम क्यों बनाते हैं यह भी किसको पता नहीं। काम चिक्षा पर बैठ एकदम काले हो जाते हैं। फिर अभी तुम ज्ञान–चिक्षा पर बैठ गोरा बन जावेंगे। तुम जिस सुख में रहते हो तो और धर्म होते ही नहीं। तो तुम आये ही हो बेहद के बाप से राज्य लेने के लिए। जानते हो बाप की शिव जयन्ति मनाई जाती है। ज़रूर भारत में ही आते हैं। स्वर्ग की सौगात ले आते हैं। तुम भी जानते हो बाबा आया हुआ है। उनको कहा ही जाता है परमपिता। यह भी मनुष्य नहीं जानते। तुम कहेंगे शिवबाबा आया हुआ है। यह तो है ब्रह्मा। यह अपन को शिव वा भगवान नहीं कहलाते। बाप ने समझाया है मैं इनके बहुत जन्मों के भी अंत के जन्म में मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। तुम कुछ भी पूछते नहीं हो। बाबा आपे ही समझाते हैं। तुम क्या पूछेंगे? तुम्हारी तो पत्थर बुद्धि थी ना। आपे ही खुद बतलाते हैं। तुम बच्चे अपने जन्मों को नहीं जानते हो। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है हमने ही 84 जन्म लिये हैं। अभी फिर रिटर्न जर्नी करनी है।

पार्ट बजाकर पूरा किया फिर रिपीट करना है। तुम कितना दूर से आये हो पार्ट बजाने। फिर वापस जाना पड़ेगा। तो जब कोई पहले–2 आते हैं तो समझाना चाहिए परमपिता एक ही है। यह तो सभी मानते हैं। शास्त्रों में भी लिखा हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा। वह दोनों तो नामी–ग्रामी हैं। प्रजापिता ब्रह्मा अभी तुमको मिलता है। जो तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियां कहलाते हो। उनसे कोई वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा मिलता ही है दो, एक हद का, दूसरा बेहद का। हद के वर्से तो जन्म–जन्मांतर लेते आये हो। बेहद का वर्सा एक ही बार मिलता है। कृष्ण का है फिर यह बहुत जन्मों के अंत का जन्म; इसलिए तुम इनके चित्र में भी 84 जन्मों की कहानी लिखते हो। मनुष्य तो इन बातों को मानेंगे नहीं। कृष्ण के शरीर में तो भगवान आते भी नहीं हैं। कहते हैं बहुत जन्मों के भी अंत के जन्म में जब काम चिक्षा पर बैठ पतित बन जाते हैं तब मैं प्रवेश करता हूँ। एक बैठते हैं तो सभी बैठ जाते हैं। एक ही बाप बैठ सभी को पावन बनाते हैं। एक पावन बनने से सभी पावन बन जाते हैं। जिसके पिछाड़ी सारा झुण्ड जाता है। अभी बाप कहते हैं वापस जाना है। मुझे बुलाया ही है कि आकर पावन होने की युक्ति बताओ। बाप तो अपने टाइम पर आते हैं। उसमें फर्क नहीं पड़ सकता। यह ड्रामा बड़ा एक्युरेट है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। संगमयुग का भी खुद बतलाते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। जब कि हम आकर तुमको ऐसा उत्तम पुरुष बनाता हूँ। उत्तम कहा जाता है श्रेष्ठ को। श्री श्रेष्ठ को कहा जाता है। शिव बाबा है श्री श्री। देवताओं को कहेंगे श्री। भारत में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कहेंगे देवताएं। ल.ना. स्वर्ग के मालिक थे ना। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। नम्बरवार होते हैं ना। तुम भी पुरुषार्थ अनुसार स्वर्ग के मालिक बनते हो। भारत की बहुत महिमा करते हैं। धरणी की महिमा नहीं है। धरणी कोई माता नहीं है। यह सभी माताएं हैं ना। अभी तुम जान गये हो हम देवी–देवताएं युगल पवित्र प्रवृत्तिमार्ग के थे। फिर पुनर्जन्म लेते रावण राज्य मे पतित बन गये हैं। जो असल देवी–देवता धर्म के थे वह कनवर्ट हो और–2 धर्मों में चले गये हैं। देवता धर्म के हैं ही नहीं। नाम बदली कर दिया है। फांउन्डेशन प्रायःलोप हो गया है। (बड़ के झाड़ का मिसाल) यह दृष्टान्त बाप ही देते हैं। सन्यासी यह दृष्टांत दे न सकेंगे। अभी बाप बतलाते हैं तुम असल देवी–देवता धर्म के हो ; परन्तु पतित होने कारण अपन को देवी–देवता नहीं कहला सकते हो। वास्तव में हो देवताएं। अभी एक धर्म की स्थापना और धर्म का विनाश हो जावेगा। तुम जब थे तो दूसरा धर्म नहीं था। यह भी तुम अभी जानते हो। आधा कल्प हमारा चलता है। फिर नीचे उतरते हैं। इस समय ही बाप आकर याद की यात्रा अथवा जिसको योग की यात्रा कहें वह सिखलाते हैं। जिससे तुम पवित्र आत्मा बन वापस जाते हो। विनाश भी ज़रूर होना है। बाप आते ही हैं संगमयुग पर। और कोई इन बातों को नहीं जानते हैं। नये–2 तो इस नॉलेज को समझ भी न सकें। उन्हों को तो सिर्फ रावण राज्य की ही नॉलेज है। रामराज्य की नॉलेज वाला यहां कोई हो नहीं सकता। बुलाते भी हैं बाबा, आओ आकर पावन बनाओ तो ज़रूर नॉलेज देंगे ना। यह भी विवेक कहते हैं प्रलय होती नहीं। तुम नवयुग में होंगे तो और बाकी धर्म शान्तिधाम में होंगे। यह पुरानी दुनियां होगी ही नहीं। तुम यह बन जावेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। विनाश भी ज़रूर होना है। तुम बच्चों के लिए नई प्रकृति भी ज़रूर चाहिए। अभी तो सारी सृष्टि तमोप्रधान पति(त) हो गई है। कुछ भी आमदनी है नहीं। यहां के फल–फूल आदि में कोई रस नहीं है। यह जैसे कि जनावरों के लिए हैं। स्वाद कुछ नहीं है। वहां सतयुग में तुम नई धरणी, सब कुछ नया, सतोप्रधान मिलेगा। नई और पुरानी चीज़ का फर्क तो ज़रूर रहता है ना। वहां बहुत वैभव होते हैं। आनाज़ भी नहीं मिलता। मनुष्य जनावर मिसल हो गये हैं। तो अनाज़ भी ऐसा मिलता है। बाप कहते हैं लायक ही ऐसे चीज़ के हैं। जनावर बुद्धि हैं ना। अभी दुःख का अंत होना है। फिर सुख ही सुख होगा। बहुत वैभव मिलेगा। तब विष्णु के परिवार के बनते हो। यहां के विष्णु बल्लभाचारी भी कसाई हैं। तुम कह सकते हो सभी कसाई हैं ; क्योंकि काम कटारी चलाते हैं ना। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है इनको

जीतने से तुम सच्चा वैष्णव बन सकते हो। काम कटारी बन्द करने से ही विष्णु बनना है। तुम तो पूरे कसाई हो। पहले तुम विष्णु कुल के थे। अभी हो रावण कुल के। विष्णु कुल की अभी फिर से बाप स्थापना करते हैं। इस यज्ञ में विघ्न भी पड़ते हैं, अत्याचार होते हैं; क्योंकि तुम पवित्र बनते हो। शादी नहीं करते हैं तो उनको घर से निकाल देते हैं। कहते हैं कसाई बनो तो हमारे कुल में रहो। नहीं तो निकल जाओ। यह किसको पता नहीं है कि यह तो वैष्णव कुल, विष्णुपुरी की स्थापना हो रही है। इसमें समझने की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। सभी एकरस तो नहीं पढ़ेंगे। पढ़ाई नहीं, योग नहीं है तो फिर यह खुशी भी नहीं रहती। पढ़ाई ,योग होगा तो अतिइन्द्रिय सुख भी होगा। आत्मा का अति इन्द्रिय सुख बाहर में भी शो करता है। बाकी कृष्ण के कोई गोप–गोपियां थे। उनकी तो दास–दासियां हो सकती है। दास–दासियां और सम्बन्धी होंगे। गोपी बल्लभ के सिर्फ गोप–गापियां तुम हो। स्वर्ग में गोप–गोपियां नहीं कहेंगे। इस समय तुम पढ़का(र) फरिश्ते बन जाते हो। तुम सा. भी फरिश्तों का करते हो। तो परफेक्ट हैं। उस समय तुम फाईनल फरिश्ते बन जावेंगे। जब लड़ाई होगी; इसलिए कहा जाता है मिरवा मौत मलुका शिकार। यह तो कांटों का जंगल है। इनको विनाश की आग लगती है। जंगली जनावर विनाश हो जाते हैं, बाकी तुम फिर अमरपुरी में जावेंगे। तुम काल पर जीत पा लेते हो। तुम्हारे में ज्ञान है। खुशी से तुम शरीर छोड़ेंगे। 84 जन्म पूरे हुये, अभी जाना है बाबा के पास। अनेक बार हमने यह 84 का चक्र लगाया है। 3/4 सुख का, बाकी 1/4 है दुःख। इस खेल में सुख जास्ती है। दुःख और सुख बराबर हो तो फिर तो शोभ(ा) ही न रहे। दुःख तब होता जब तुम तमोप्रधान बनते हो। सतोप्रधान हो तो बहुत सुख है। बाप कहते हैं तुम तमोप्रधान बन जाते हो तो फिर मैं तुमको आकर सतोप्रधान बनाकर ले जाता हूँ। अभी तुम बाप को जान कर आस्तिक बन गये हो। अभी तुम्हारे पास ज्ञान है। फिर इस ज्ञान की दरकार नहीं रहेगी। न किसको देना है। तुम अभी नॉलेजफुल बनते हो। फिर वहां दरकार नहीं रहेगी। भूल जाते हो। जैसे मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो पास्ट की बातें भूल जाते हैं ना। अभी तुम बच्चे समझते हो पहले हम आसुरी बुद्धि थे। अभी ईश्वरीय बुद्धि बने हैं। फिर देवता बनेंगे तो यह बुद्धि नहीं होगी। इस समय ईश्वर बुद्धि देते हैं। बाप कहते हैं मेरे में जो सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान है वह मैं तुम बच्चों को देता हूँ। यह धारण भी तब होगा अगर तुम आत्माभिमानी होंगे। बाप को भूलने से और देह का अभिमान होने से जो विकर्म होगा वह भी सौणा(सौगुणा) हो जावेगा; इसलिए गायन है सद्गुरू का निन्दक ठौर न पावे। एमऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। अगर न पढ़ा तो निन्दा कराई तो पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। वह गुरू लोग फिर अपने दुकार(न)दारी निकाल बैठे हैं। स्त्री का पति भी गुरू है। फिर दोनों ही सन्यासियों को अपना गुरू करते हैं। जो हैं ही निवृत्तिमार्ग के। वह ऊँच बनाने का ज्ञान तो दे न सके। ताकत ही नहीं। वह हैं हठयोगी। जंगल में ले जावेंगे। एक है हद का सन्यास दूसरा है बेहद का सन्यास। उनमें अल्पकाल का सुख। पतित दुनियां है ना। इनमें सुख कहां से आया? उसमें अंतर्मुखता बहुत–2 चाहिए। घड़ी–2 अपन को आत्मा समझ बाप को याद करे तो विकर्म विनाश हो; इसलिए पढ़ाई पर अटेन्शन देना चाहिए। पढ़ते'–2 माया से हार खा लेते हैं काम का ठूंसा लगने से एकदम चट खाते में हो जाते हैं; इसलिए बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इनको जीतने से जगतजीत बनेंगे। तुम ही थे फिर तुमको ही बनने का है। सभी तो ज्ञान नहीं लेंगे। बाप भी गुप्त है, तुम्हारी पढ़ाई भी गुप्त है। किसको पता है नहीं कि तुम विश्व के मालिक बनने वाले हो। यह तुम ही जानते हो। चलते–फिरते बाप को याद करते हम पावन, एवर निरोगी बन जाते हैं; इसलिए बाबा ने समझाया है हेल्थ डिपार्टमेन्ट को समझाओ। एक को समझाया तो क्या करेंगे? एक ने समझा, परमिशन दी , फिर दूसरा कोई निकला। न समझा तो परमीशन नहीं देंगे। अच्छा , मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। ओमशान्ति।